



# Sau.Tarawati. Goswami

12 Jul 1992

08:42 AM

Bharatpur

Model: All-Remedies-Report

Order No: 121687401

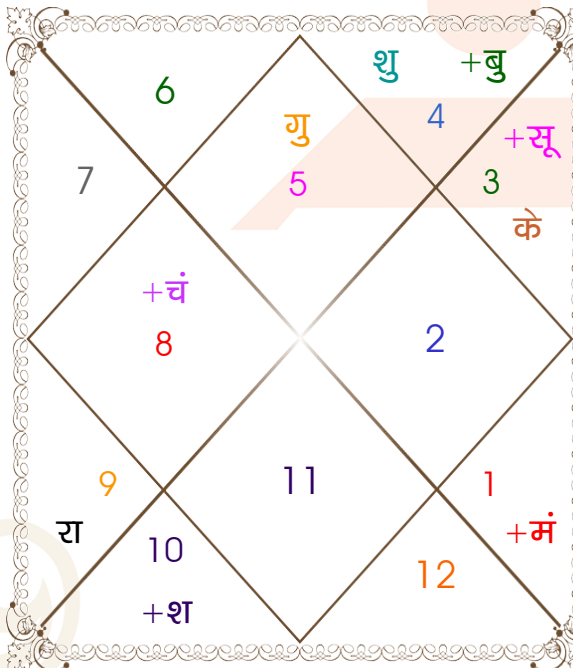
तिथि 12/07/1992 समय 08:42:00 वार रविवार स्थान Bharatpur चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:28  
अक्षांश 27:13:00 उत्तर रेखांश 77:29:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:20:04 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 03:43:00 घं	गण _____: राक्षस
वेलान्तर _____: 00:05:36 घं	योनि _____: मृग
सूर्योदय _____: 05:33:46 घं	नाडी _____: आद्य
सूर्यास्त _____: 19:17:19 घं	वर्ण _____: विप्र
चैत्रादि संवत _____: 2049	वश्य _____: कीटक
शक संवत _____: 1914	वर्ग _____: मृग
मास _____: आषाढ़	रैजा _____: अन्त्य
पक्ष _____: शुक्ल	हंसक _____: जल
तिथि _____: 13	जन्म नामाक्षर _____: यी-यीशा
नक्षत्र _____: ज्येष्ठा	पाया(रा.-न.) _____: लौह-ताम्र
योग _____: ब्रह्म	होरा _____: चंद्र
करण _____: तैत्तिल	चौघड़िया _____: चर

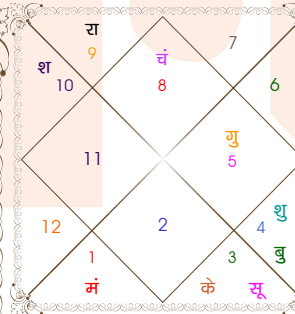
विंशोत्तरी	योगिनी
बुध 4वर्ष 5मा 15दि	भद्रिका 1वर्ष 3मा 22दि
सूर्य	भद्रिका
27/12/2023	03/11/2024
26/12/2029	03/11/2029
सूर्य 15/04/2024	भद्रिका 14/07/2025
चन्द्र 14/10/2024	उल्का 15/05/2026
मंगल 19/02/2025	सिद्धा 05/05/2027
राहु 14/01/2026	संकटा 14/06/2028
गुरु 02/11/2026	मंगला 03/08/2028
शनि 15/10/2027	पिंगला 13/11/2028
बुध 20/08/2028	धान्या 14/04/2029
केतु 26/12/2028	भामरी 03/11/2029
शुक्र 26/12/2029	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			05:56:34	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	---	0:00			
सूर्य			26:16:06	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	केतु	सम राशि	1.77	अमात्य	पितृ	मित्र
चंद्र			26:30:12	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	गुरु	नीच राशि	1.43	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			26:04:46	मेष	भरणी	4	शुक्र	केतु	स्वराशि	1.30	भातृ	भातृ	विपत
बुध			21:17:31	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	1.09	पुत्र	ज्ञाति	जन्म
गुरु			17:45:56	सिंह	पूर्वाफाल्गुनी	2	शुक्र	मंगल	मित्र राशि	1.47	ज्ञाति	धन	विपत
शुक्र			04:05:43	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	शत्रु राशि	1.00	कलत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि	व		23:13:55	मक	श्रवण	4	चंद्र	सूर्य	स्वराशि	1.15	मातृ	आयु	प्रत्यारि
राहु			06:56:12	धनु	मूल	3	केतु	राहु	नीच राशि	---		ज्ञान	सम्पत
केतु			06:56:12	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	नीच राशि	---		मोक्ष	वध

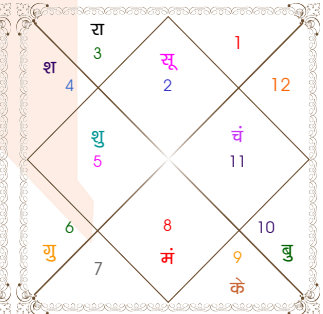
### लग्न-चलित



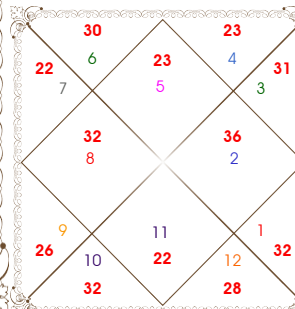
### चन्द्र कुंडली



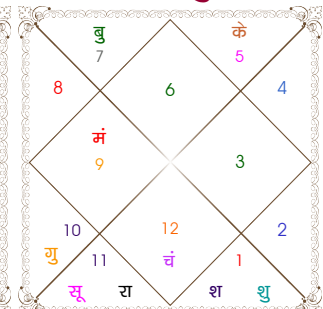
### नवमांश कुंडली



### सर्वाष्टकवर्ग



### दशमांश कुंडली



## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

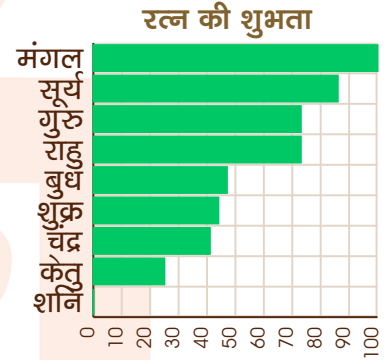
आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	86%	धनार्जन, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	73%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	73%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	47%	व्यय, हानि, धन हानि
हीरा	शुक्र	44%	व्यय, व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	41%	ग्रह कलेश, व्यय
लहसुनिया	केतु	25%	हानि, व्यय
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	26/12/1996	92%	16%	100%	61%	73%	53%	0%	73%	25%
केतु	27/12/2003	73%	16%	100%	47%	73%	53%	0%	61%	50%
शुक्र	27/12/2023	73%	16%	100%	55%	73%	59%	0%	80%	38%
सूर्य	26/12/2029	98%	52%	100%	47%	80%	19%	0%	61%	0%
चंद्र	27/12/2039	92%	58%	100%	55%	73%	44%	0%	61%	0%
मंगल	27/12/2046	92%	52%	100%	22%	80%	44%	0%	61%	38%
राहु	26/12/2064	73%	16%	92%	47%	73%	53%	0%	86%	0%
गुरु	26/12/2080	92%	52%	100%	22%	86%	19%	0%	73%	25%
शनि	27/12/2099	73%	16%	92%	55%	73%	53%	2%	80%	0%

# विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।  
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

### आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पुखराज एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना, हीरा, मोती व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

नीलम पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

### मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते हैं। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते हैं। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

### माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न

माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते हैं। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते हैं। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यों को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

### पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरुचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। पंचमेश गुरु लग्नेश सूर्य का मित्र है। अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न की शुभता आपकी आयु पर आने वाले कष्टों का निवारण कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप प्रीति विषय, आमोद-प्रमोद, सांसारिक सुख, संतान एवं ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। रत्न की शुभता से आपको संतान प्राप्ति के योग बन सकते हैं। आप पुखराज रत्न कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। रत्न शुभता आपको गणित, ज्योतिष, धार्मिक ग्रंथ, वेद वेदान्त और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों में आपकी रुचि जागृत कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल,

हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

### गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यों में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

### पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको जीवन के कुछ सुनहरे अवसरों को खोना पड सकता है। बौद्धिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको समय समय पर

हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा किए गये नियोजन कार्य असफल हो सकते हैं। समझ बूझ की कमी भी आपको अवगत हो सकती है। पन्ना रत्न पहनने पर आपके शेयर बाजार से जुड़े क्षेत्रों में हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके द्वारा संचित धन आपके काम न आकर दूसरों के काम ज्यादा आ सकता है। बुध रत्न पन्ना आपमें व्यवहारिकता की भी कमी कर सकता है। पिता के स्नेह में कमी की स्थितियां भी यह रत्न आपमें बना सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप अत्यधिक उच्चाभिलाषी होकर स्वाधी हो सकते हैं। यह रत्न कुटुंब से आपका वाद-विवाद करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी आय संचय का रूप नहीं ले पाएगी। आय की अस्थिरता आपकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकती है। पन्ना रत्न आपके धन में कमी करेगा। इस रत्न को धारण करने पर शेयर बाजार में आपके द्वारा धन विनियोजन आपको हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके आय साधन सीमित हो सकते हैं। पन्ना रत्न आपको वाचाल बना सकता है। रत्न शुभता के अभाव के कारण आपकी वाकशक्ति में मधुरता व चातुर्य की कमी हो सकती है।

### हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपका वैवाहिक जीवन तनाव युक्त हो सकता है। हीरा रत्न आपके व्ययों को सौंदर्य विषयों पर केन्द्रित कर सकता है। इसके साथ ही रत्न प्रभाव से आपके व्यय ग्रहस्थ जीवन के सुख प्राप्ति से संबंधी हो सकते हैं। विदेश गमन, शयन सुख को भी यह रत्न प्रभावित कर रहा है। हीरा रत्न आपके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को बाधित कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हो सकता है कि आपका धन-धान्य, आय एवं उन्नति आशातीत न हों। यह भी संभावित है कि आप अपने जीवन साथी का समय पर साथ न दे पाएं। दायित्वों के निर्वाह में आपसे कहीं कुछ त्रुटि हो सकती है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हो सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। शुक्र रत्न हीरा धारण से आप मित्रवर्ग में विपरीत लिंग को विशेष रूप से आकर्षित कर सकते हैं। यह रत्न आपकी बहुमुखी प्रतिभा को सीमित कर सकता है। अपनी कलाएं दिखाने के आपको अवसर कम मिल सकते हैं। हीरा रत्न प्रभाव विवाह के बाद आपके भाग्योदय को बाधित कर सकता है। रत्न प्रभाव आपकी कामुकता भाव में वृद्धि कर रहा है। यह रत्न आपको मित्रों से धोखे दिला सकता है। हीरा रत्न कार्यक्षेत्र में आपको भौतिक सुख सुविधाओं की कमी व सवारी सुख का अभाव दे सकता है। धारण करने पर आपको उच्चाधिकार प्राप्ति के लिए विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है।

### मोती

आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपका अपनी माता

और परिवार से आत्मिक लगाव कुछ कम हो सकता है। उदारता, प्रसन्नता और मानसिक शांति की कमी आप महसूस करेंगे। यह रत्न आपकी माता के स्वास्थ्य को आंशिक कमजोर कर सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। मोती रत्न प्रभाव से आपको आराम, अच्छे वाहन, अच्छे मित्र और अचल संपत्ति की प्राप्ति के लिए सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। इसके अलावा यह रत्न आपकी स्मरणशक्ति को भी कमजोर करेगा। रत्न शक्तियां आपमें परोपकार भावना के विकास को बाधित करेगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यों में परेशानियां बनी रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते है। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते है। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते है।

### लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने से आपके पेट की बीमारियां बढ़ सकती है। आपके द्वारा स्वयं की हानि हो सकती है। शत्रु आपकी परेशानियां बढ़ सकते है। सरकार या राजा द्वारा सम्मान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। प्रशंसा की कमी का अनुभव आपको हो सकता है। यह रत्न आपके पराक्रम, प्रतिष्ठा और लोकप्रियता में प्रतिकूलता ला सकता है। आभूषण और ऐश्वर्य के लिए भी रत्न का सुख सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप के अधिकतर कार्य अधूरे रह सकते है। आपकी चिंताओं में बढ़तेरी होगी। तथा संतान से संबंधों की मधुरता कम हो सकती है। बड़े भाई-बहनों से संबंधों की प्रगाढ़ता भी प्रभावित हो सकती है।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

### नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो

सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते हैं। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते हैं। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते हैं।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते हैं। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

### दशानुसार रत्न विचार

#### सूर्य

(27/12/2023 - 26/12/2029)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

#### चन्द्र

(26/12/2029 - 27/12/2039)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, मोती व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**मंगल**  
**(27/12/2039 - 27/12/2046)**

मंगल की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**राहु**  
**(27/12/2046 - 26/12/2064)**

राहु की दशा में आपका मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पुखराज व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**गुरु**  
**(26/12/2064 - 26/12/2080)**

गुरु की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, हीरा व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**शनि**  
**(26/12/2080 - 27/12/2099)**

शनि की दशा में आपका मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पुखराज, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने

हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुड़े रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता है। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता है।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पत्ति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता है, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती है। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

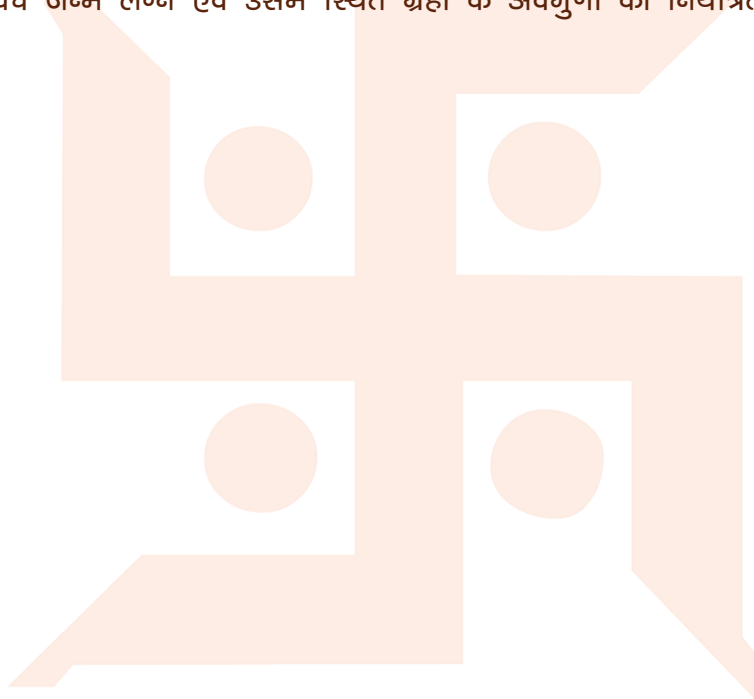
बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव

हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखें। जीवन साथी की भावनाओं को आहत करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करें। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।
- शुक्र, बुध और राहु 2, 5, 9 या 12 वें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में स्त्रीर खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

#### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।